डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ऑपन यूनिवर्सिटी के तृतीय दीक्षान्त समारोह में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन। (दिनांक : ३ मई, २०१८)

- मुझे कुलाधिपति के नाते डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ऑपन यूनिवर्सिटी के तृत्तीय दीक्षांत समारोह में आने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैंने गत वर्षो में इस विश्वविद्यालय की प्रगति को देखा है। यह विश्वविद्यालय डॉ. बाबा साहब आंबेडकर के नाम पर है। स्वाभाविक रूप से ही हमें उनके आदर्शो तथा उनके संदेश को बराबर ध्यान में रखना चाहिये तथा अपने जीवन और व्यवहार में उस संदेश का अनुपालन करना चाहिये।

- हमारा समाज कई विषमताओं से भरा है। इसमें आर्थिक विषमताएं भी है, सामाजिक विषमताएं भी है। इन विषमताओं की चुभन और पीड़ा डॉ. बाबा साहब आंबेडकर को थी। वे यह चाहते थे कि एक ऐसा समाज बने जिस समाज में आर्थिक विषमता और सामाजिक विषमता के स्थान पर मनुष्य मनुष्य के बीच समानता और समरसता हो। ऐसे समाज का सर्जन करने के लिए बाबा साहब आंबेडकरने काफी संघर्ष किया। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने अपने आपको तैयार किया। उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने हमें एक ऐसा संविधान दिया जिसमें मानवीय मूल्यों पर ज़ोर दिया गया हो, स्वतंत्रता तथा समानता पर

ज़ोर दिया गया हो। उन्होंने अपने अनुयायिओं को अनुरोध किया था कि वे शिक्षित बने, संगठित हो और संघर्ष करें। ये तीन बातें वे अपने अनुयायिओं को सतत कहते थे। आज हम खुद से यह प्रश्न कर सकते है कि क्या बाबा साहब आंबेडकर जी के स्वप्नों का भारत बना है कि नहीं। अगर बाबा साहब आंबेडकर के स्वप्नों का भारत अभी तक नहीं बना है, तो हमारा यह दायित्व बनता है कि हमें जो शिक्षा प्राप्त हुई है उस शिक्षा के बल पर हम उनके अधूरे स्वप्नों को पूरा करने का प्रयास करें।

- डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ऑपन यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त कर के आप सभी छात्र-छात्राएं अब एक नये क्षेत्र में कदम रखने जा रहे हैं। ऐसे समय पर आपको इस बात का ध्यान रखना होगा कि आप एक ऐसी यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त करके बाहर आये है जिस विश्वविद्यालय के साथ बाबा साहब आंबेडकर का नाम जुड़ा हुआ है और डॉ. बाबा साहब आंबेडकर के स्वप्न अभी अधूरे है। समाज में समानता और समरसता जब तक नहीं आयेगी तब तक उनके स्वप्न पूरे नहीं होंगे। इन प्रयासो में आपका योगदान बना रहे, इस बात को आपको हमेशा याद रखना है।

- हमारे देश में जो परंपरागत विश्वविद्यालय है, उनके साथ-साथ ऑपन यूनिवर्सिटी जैसे भी संस्थान है। परंपरागत विश्वविद्यालय के होते हुये भी ऑपन यूनिवर्सिटी

प्रकार के संस्थानों की जरूरत इसलिए पड़ती है कि हमारे समाज का एक ऐसा भी वर्ग है जो विभिन्न कारणों से परंपरागत विश्वविद्यालयों में नियमित जाकर पढ़ाई प्राप्त नहीं कर सकता। अनुकूल परिस्थितियां न होने पर कुछ लोग नियमित विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेकर शिक्षा नहीं प्राप्त कर सकते। ऐसे लोगों को भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले इसके लिए ऐसी ऑपन विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। इस प्रकार के लोगों तक पहुँचने के लिए ऑपन यूनिवर्सिटी एक अच्छा माध्यम है। हमे इस बात का स्वीकार करना पड़ेगा।

- अभी आपने यहाँ देखा कि हमारी एक बहनने 74 वर्ष की आयु में इस विश्वविद्यालय से ज्ञान प्राप्त करके उपाधि प्राप्त की और मेडल भी प्राप्त किया। मैं उनको बहुत बहुत बधाई देता हूँ। जिस आयु में लोग अपनी जिम्मेवारियों से निवृत्त हो जाते है ऐसे समय पर पढ़ाई करना, उपाधि प्राप्त करना तथा मेडल भी लेना ये अपने आप में बड़ी बात है। मैं मानता हूँ कि उन्होंने हमारे सामने जो आदर्श उपस्थित किया है उसका अनुसरण उनकी आयु के दूसरे लोग भी करें।
- आज यहाँ से जिन छात्रों को डिग्री प्राप्त हुई है तथा मेडल प्राप्त हुये हैं उन सबको उनकी सफलता के लिये मैं बहुत बधाई देता हूँ। उनकी जीवन यात्रा का एक पड़ाव पूरा हो चुका है। अब वह दूसरे पड़ाव में जा रहे हैं जहां वो अवश्य सफल हों, ऐसी मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

- डॉ. बाबा साहब आंबेडकर ऑपन यूनिवर्सिटी की 25 साल की यात्रा सफल रही है ऐसा हम कह सकते है। यहाँ का स्टाफ तथा प्रशासन बधाई के पात्र है। हमें बताया गया है को केम्पस को पूरी तरह से कैशलेस बना लिया गया है । प्रवेश 100% Online है। डिजिटल इण्डिया के क्षेत्र में भी यह विश्वविद्यालय काफी कुछ कर रहा है। अभी हम जिस दौर से गुजर रहे है यह technology की तेज प्रगति का दौर है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में उपलब्ध technology का अच्छे से इस्तेमाल करके शिक्षा को हम कैसे बेहतर बना सकते हैं, यह चुनौती आज हमारे विश्वविद्यालयों के सामने है। समय बदलता रहता है। कभी-कभी समय की रफ़्तार तेज होती है तथा हमारी रफ़्तार कम होती है। नतीजा यह होता है की समय आगे निकल जाता है और हम पीछे रह जाते है। इसलिये शिक्षा संस्थानों को समय के साथ अपने को बदलना होगा। पाठ्यक्रम, courses में भी समय-समय पर बदलाव लाने की आवश्यकता है। मुझे इस बात की खुशी है कि यह विश्वविद्यालय समय के अनुसार इन सभी व्यवस्थाओं में परिवर्तन कर रहा है।
- सामान्यत: जीवन संघर्षपूर्ण रहता है। प्रवाह के साथ तैरना और प्रवाह के विरूद्ध तैरना इन दोनों स्थितियों में जमीन आसमान का अंतर है। प्रवाह के साथ तैरने में ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ता लेकिन प्रवाह के विरूद्ध तैरने मे काफी संघर्ष करना

पड़ता है। मगर ये भी सच है की संघर्ष ही हमें कुछ सिखा सकता है। आपको यह मानकर चलना पड़ेगा कि जीवन में हमेशा अनुकूल परिस्थितियां नहीं रहती। इसीलिए विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की क्षमता आप में होनी चाहिये। डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हमारे स्वर्गीय राष्ट्रपति एक ऐसे व्यक्ति थे जो विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष करते करते काफी आगे बढ़े और हमारे देश के राष्ट्रपति बने। आप डॉ. कलाम जैसे महानुभावों के जीवन से काफी सीख सकते है।

- आज इस विश्वविद्यालय में अपना अभ्यासक्रम पूर्ण करके उपाधि प्राप्त करके आप अपने जीवन की यात्रा आरंभ कर रहे है। आप सोचते होंगे कि अब आपको क्या करना चाहिये। में याद दिलाना चाहूँगा कि आपके ऊपर समाज का और राष्ट्र का जो ऋण है, उस ऋण से आपको मुक्त होना है। समाज से आपने जो लिया है वो समाज को लौटाना पड़ेगा। मैं आपसे यह अनुरोध करूंगा कि आप अच्छे नागरिक बनें और अपने राष्ट्र के लिये, उसके विकास के लिये अपना योगदान देते रहे। बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद ।